५ रहीम के दोहे

कहानी का सारांश

- रहीम कहते हैं कि बड़ी या महंगी वस्तु हाथ लगने पर छोटी या सस्ती वस्तु का मूल्य कम नहीं हो जाता। हर वस्तु का अपना महत्त्व होता है। जैसे तलवार से बड़े काम होते हैं, वैसे ही छोटी सी सुई भी कई बार बड़े काम आ जाती है।
- पेड़ अपने फल नहीं खाता और नदी अपना पानी नहीं पीती। रहीम कहते हैं कि बुद्धिमान व्यक्ति धन को केवल अपने काम के लिए जमा करता है।
- रहीम कहते हैं कि प्रेम के धागे को कभी मत तोड़ो, क्योंकि टूटा हुआ धागा फिर कभी पहले जैसा नहीं जुड़ता, जुड़ेगा तो गांठ लग जाएगी।
- रहीम कहते हैं कि पानी को बचाकर रखो क्योंकि बिना पानी के सब कुछ व्यर्थ है। पानी के बिना मोती, इंसान और चूना सब बेकार हो जाते हैं।
- रहीम कहते हैं कि थोड़े दिन की मुसीबत अच्छी होती है, क्योंकि मुसीबत में ही इंसान अच्छे बुरे को पहचान पाता है।
- रहीम कहते हैं कि जीभ बहुत ही बेकाबू होती है, वह स्वर्ग और नर्क दोनों की बात कर सकती है। लेकिन असल में वह तो मुंह के अंदर ही रहती है और अपने ही सिर पर पत्थर मारती है।
- रहीम कहते हैं कि सुख में तो बहुत से लोग मित्र बन जाते हैं, लेकिन मुसीबत में ही असली मित्र की पहचान होती है।

शब्दार्थ:

लघु : छोटा
डारि : देना
तरुवर : पेड़
सरवर : तालाब
पियहिं : पीते हैं
काज : काम
संपति : धन
सँचहि : जमा करना
सुजान : बुद्धिमान
प्रेम : प्यार

छिटकाय : झटके से
मानुष : इंसान
बिपदाहू : मुसीबत
भली : अच्छी
थोरे : थोड़े
हित अनहित : अच्छा बुरा
जगत : संसार
परत : पहचान लेते हैं
जिह्वा : जीभ
बावरी : बेकाबू

सरग : स्वर्ग
पातल : नर्क
आपु : स्वयं
संपति : धन
बिपति : मुसीबत
कसे : परखती
साँचे : असली
मीत : मित्र
जूती खात कपाल: अपना सिर फोड़ती है

प्रश्न अभ्याश

मेरी समझ से

(क) नीचे दिए गए प्रश्नों का सबसे सही सटीक उत्तर कौन सा है । उसके सामने तारा (★) बनाइए-

1. **"रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल। आपु तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।" दोहे का भाव है-**

- सोच-समझकर बोलना चाहिए। ★
- मधुर वाणी में बोलना चाहिए।
- धीरे-धीरे बोलना चाहिए।
- सदा सच बोलना चाहिए।

2. **"रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि। जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि।" इस दोहे का** भाव क्या है?

- तलवार सुई से बड़ी होती है।
- सुई का काम तलवार नहीं कर सकती।
- तलवार का महत्व सुई से ज्यादा है।
- हर छोटी-बड़ी चीज़ का अपना महत्व होता है। ★

(ख) अब अपने मित्रों के साथ तर्कपूर्ण चर्चा कीजिए कि आपने ये ही उत्तर क्यों चुने?

उत्तर:-

1. यह दोहा हमें बताता है कि जीभ (जिह्वा) बहुत शक्तिशाली होती है। अगर हम सोच-समझकर नहीं बोलते, तो हम गलत बातें कह सकते हैं जो दूसरों को दुख पहुंचा सकती हैं या हमारे लिए मुसीबतें पैदा कर सकती हैं। इसलिए हमें हमेशा सोच-समझकर बोलना चाहिए।
2. यह दोहा हमें बताता है कि हर चीज़ का अपना महत्व होता है, चाहे वह बड़ी हो या छोटी। जैसे तलवार से बड़े काम होते हैं, वैसे ही सुई भी कई बार बड़े काम आ जाती है। इसलिए हमें किसी भी चीज़ को छोटा नहीं समझना चाहिए।

मिलकर करें मिलान

पाठ में से चुनकर कुछ वाक्यांश नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें इनके सही अर्थ या संदर्भ से मिलाइए। इसके लिए आप शब्दकोश, इंटरनेट या अपने शिक्षकों की सहायता ले सकते हैं।

स्तंभ 1	स्तंभ 2	उत्तर:
1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय । टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय ।।	1. सज्जन परहित के लिए ही संपत्ति संचित करते हैं।	1. 3
2. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत। बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत।।	2. सच्चे मित्र विपत्ति या विपदा में भी साथ रहते हैं।	2. 2
3. तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिं न पान। कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।	3. प्रेम या रिश्तों को सहेजकर रखना चाहिए।	3. 1

पंक्तियों पर चर्चा

नीच दिए गए दोहों पर समूह में चर्चा कीजिए और उनके अर्थ या भावार्थ अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए-

(क) "रहिमन बिपदाहू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।"

उत्तर : इस दोहे में रहीम कहते हैं कि थोड़े समय के लिए आई विपत्ति भी अच्छी होती है क्योंकि इससे हमें अपने मित्र और शत्रु का सही ज्ञान हो जाता है। कठिन समय में ही यह पता चलता है कि कौन हमारा सच्चा मित्र है और कौन केवल स्वार्थ के लिए हमारे साथ है।

(ख) "रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आप तो कहि भीतर रही, जूती खात कपाल।।"

उत्तर : इस दोहे में रहीम जिह्वा (जुबान) की असावधानी पर ध्यान आकर्षित करते हैं। वे कहते हैं कि जुबान बिना सोचे-समझे कुछ भी कह देती है, जिससे अच्छे या बुरे परिणाम हो सकते हैं। जबकि, खुद जुबान तो मुंह के अंदर रहती है, लेकिन उसके द्वारा बोले गए गलत शब्दों का असर उसके मालिक (जिसके सिर पर) पर पड़ता है, और उसे मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है।

सोच-विचार के लिए

दोहों को एक बार फिर से पढ़िए और निम्नलिखित के बारे में पता लगाकर अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए-

1. **"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।**
टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।।"

(क) इस दोहे में 'मिले' के स्थान पर 'जुड़े' और 'छिटकाय' के स्थान पर 'चटकाय' शब्द का प्रयोग भी लोक में प्रचलित है। जैसे–
"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय ।।"
इसी प्रकार पहले दोहे में 'डारि' के स्थान पर 'डार', 'तलवार' के स्थान पर 'तरवार' और चौथे दोहे में "मानुष' के स्थान पर 'मानस' का उपयोग भी प्रचलित हैं। ऐसा क्यों होता है?
उत्तर: विभिन्न शब्दों का प्रयोग, जैसे "मिले" की जगह "जुड़े" और "छिटकाय" की जगह "चटकाय", भाषा के क्षेत्रीय और बोलियों के अनुसार होता है। इससे भाषा में विविधता और सांस्कृतिक रंग झलकता है।

(ख) इस दोहे में प्रेम के उदाहरण में धागे का प्रयोग ही क्यों किया गया है? क्या आप धागे के स्थान पर कोई अन्य उदाहरण सुझा सकते हैं? अपने सुझाव का कारण भी बताइए।
उत्तर: दोहे में प्रेम को "धागे" से तुलना इसलिए की गई है क्योंकि धागा नाजुक होता है और एक बार टूटने पर उसे जोड़ने पर गाँठ पड़ जाती है। धागे की जगह "काँच" का उदाहरण दिया जा सकता है, क्योंकि काँच भी नाजुक होता है और टूटने पर उसे जोड़ना मुश्किल होता है।

2. **"तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियहिँ न पान ।**
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान।।"

इस दोहे में प्रकृति के माध्यम से मनुष्य के किस मानवीय गुण की बात की गई है? प्रकृति से हम और क्या-क्या सीख सकते हैं?

उत्तर: यह दोहा हमें बताता है कि प्रकृति से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। हमें प्रकृति से निःस्वार्थ भाव, संतुलन, दान, सहयोग और संतोष जैसी कई अच्छी आदतें सीखनी चाहिए।

शब्दों की बात

हमने शब्दों के नए-नए रूप जाने और समझे। अब कुछ करके देखें-

- **शब्द-संपदा - कविता में आए कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन शब्दों को आपकी मातृभाषा में क्या कहते हैं? लिखिए।**

उत्तर:

कविता में आए शब्द	मातृभाषा में समानार्थक शब्द	कविता में आए शब्द	मातृभाषा में समानार्थक शब्द
1. तरुवर	पेड़	5. सरवर	तालाब
2. बिपति	कष्ट	6. साँचे	सच्चे
3. छिटकाय	तोड़ना	7. कपाल	दिमाग
4. सुजान	सज्जन		

- **शब्द एक अर्थ अनेक**

"रहिमन पानी राखिये, बिनु पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।"

इस दोहे में 'पानी' शब्द के तीन अर्थ हैं– सम्मान, जल, चमक।
इसी प्रकार कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। आप भी इन शब्दों के तीन-तीन अर्थ लिखिए। आप इस कार्य में शब्दकोश, इंटरनेट, शिक्षक या अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।

1. **कल** – आने वाला कल, चैन या शांति, पुर्जा/मशीन
2. **पत्र** – पत्ता, चिट्ठी, दल
3. **कर** – हाथ, टैक्स, किरण
4. **फल** – परिणाम, एक खाने का फल (आम), हल का अग्र भाग

Free worksheets, Learning material, practice tests & more at www.onepointlearning.com

पाठ से आगे

आपकी बात

"रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ॥"

इस दोहे का भाव है– न कोई बड़ा है और न ही कोई छोटा है। सबके अपने-अपने काम हैं, सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता और महत्ता है। चाहे हाथी हो या चींटी, तलवार हो या सुई, सबके अपने-अपने आकार-प्रकार हैं और सबकी अपनी-अपनी उपयोगिता और महत्व है। सिलाई का काम सुई से ही किया जा सकता है, तलवार से नहीं। सुई जोड़ने का काम करती है जबकि तलवार काटने का। कोई वस्तु हो या व्यक्ति, छोटा हो या बड़ा, सबका सम्मान करना चाहिए।

अपने मनपसंद दोहे को इस तरह की शैली में अपने शब्दों में लिखिए । दोहा पाठ से या पाठ से बाहर का हो सकता है।

उत्तर: यहाँ एक नया दोहा है जो इसी भाव को व्यक्त करता है:

कोयल बोल उठे वन में, बुलबुल गा रही गीत।चिड़िया चहचहाती डाल पर, मोर नाच रहा शीत।

इस दोहे का अर्थ:

कोयल, बुलबुल, चिड़िया और मोर, ये सभी अलग-अलग पक्षी हैं और अलग-अलग आवाजें निकालते हैं। फिर भी, वन में सभी का अपना महत्व है।

सरगम

- **रहीम, कबीर, तुलसी, वृंद आदि के दोहे आपने दृश्य-श्रव्य (टी.वी. रेडियो) माध्यमों से कई बार सुने होंगे। कक्षा में आपने दोहे भी बड़े मनोयोग से गाए होंगे। अब बारी है इन दोहों की रिकॉर्डिंग (ऑडियो या विजुअल) की। रिकॉर्डिंग सामान्य मोबाइल से की जा सकती है। इन्हें अपने दोस्तों के साथ समूह में या अकेले गा सकते हैं। यदि संभव हो तो वाद्ययंत्रों के साथ भी गायन करें। रिकॉर्डिंग के बाद दोहे स्वयं भी सुनें और लोगों को भी सुनाएँ ।**
  उत्तर: स्वयं कीजिए।

- **रहीम, वृन्द, कबीर, तुलसी, बिहारी आदि के दोहे आज भी जनजीवन में लोकप्रिय हैं। दोहे का प्रयोग लोग अपनी बात पर विशेष ध्यान दिलाने के लिए करते हैं। जब दोहे समाज में इतने लोकप्रिय हैं तो क्यों न इन दोहों को एकत्र करें और अंत्याक्षरी खेलें। अपने समूह मिलकर दोहे एकत्र कीजिए। इस कार्य में आप इंटरनेट, पुस्तकालय और अपने शिक्षकों या अभिभावकों की सहायता भी ले सकते हैं।**
  उत्तर: स्वयं कीजिए।

आज की पहेली

1. **दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम**
   उल्टा होकर नाच दिखाऊँ, मैं क्यों अपना नाम बताऊँ। **उत्तर:** अन्न

2. **एक किले के दो ही द्वार, उनमें सैनिक लकड़ीदार**
   टकराएँ जब दीवारों से, जल उठे सारा संसार। **उत्तर:** अग्नि